सप्तर्षि : भगवान नित्यानन्द के साथ एक प्रसंग

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

भारत में ऐसा कहा जाता है कि रात का आकाश सप्तर्षियों द्वारा प्रकाशित होता है। ये सप्तर्षि, वे सात ऋषि हैं जिनकी सिखावनियाँ सदियों से पूजनीय रही हैं, जिन्हें दैवी प्रेरणा से शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त हुआ और फिर उन्होंने इस ज्ञान को लोगों तक पहुँचाने को अपने जीवन का ध्येय बना लिया। ये ऋषिगण हैं - ऋषि कश्यप, ऋषि अत्रि व ऋषि भारद्वाज, ऋषि विश्वामित्र व ऋषि गौतम, ऋषि जमदग्नि व ऋषि वसिष्ठ। प्रत्येक ऋषि के लिए आकाश में प्रतीकस्वरूप एक-एक तारा है। साथ मिलकर ये सातों तारे 'सप्तर्षि' नामक एक तारा-मण्डल की रचना करते हैं जिसे पश्चिमी देशों में 'बिग डिपर' के नाम से जाना जाता है।

भारत में बहुत से लोग इन सप्तर्षियों की पूजा करते हैं। ऐसी प्रथा है कि यह पूजा-अर्चना श्रावण मास की पूर्णिमा पर की जाती है जो कि प्रायः अगस्त के माह में आता है। फिर भी कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने यदि कोई व्यक्तिगत व्रत लिया हो तो वे पूरे वर्ष यह पूजा करते हैं।

कुछ ऐसा ही व्रत एक अम्मा ने लिया था जो १९५० के दशक में मुम्बई में रहा करती थीं। हर माह, पूर्णिमा की रात को वे अपनी पूजा-वेदी पर सात सुपारियाँ सजातीं। हर एक सुपारी, एक ऋषि के लिए समर्पित होती। दिए-अगरबत्ती के साथ वे पूजा करतीं; सारा वातावरण अगरबत्ती की महक से भर उठता जब उसका धुआँ कोमल महीन बादलों के समान धीरे-धीरे वातावरण में घुलने लगता।

और ये अम्मा भक्त थीं, एक महान सिद्धगुरु की, एक सदेह गुरु की जो तानसा नदी की घाटी में स्थित गणेशपुरी नामक गाँव में निवास करते थे। वे भक्त थीं, भगवान नित्यानन्द की।

एक साल, गर्मियों के मौसम में ये अम्मा बड़े बाबा के दर्शन करने गणेशपुरी आईं। उन्होंने सोचा था कि वे कुछ दिन गणेशपुरी गाँव में रुकेंगी और फिर पूर्णिमा पर घर वापस चली जाएँगी ताकि वे सप्तर्षियों की पूजा कर सकें।

जब पूर्णिमा का दिन आया तो उन अम्मा ने घर जाने से पहले बड़े बाबा के दर्शन करने जाने की तैयारी की। वे कैलास-निवास की ओर जाती एक सँकरी सड़क पर चल दीं। कैलास-निवास वह नवीन

इमारत थी जिसका निर्माण बड़े बाबा के रहने के लिए किया गया था और यहीं पर वे श्रद्धालुओं को दर्शन दिया करते थे। गाँव में सब ओर शान्ति छाई थी। उस समय गाँव में कुछ ही घर बने हुए थे जो दूर-दूर थे और एक दुकान थी — एक किराने की दुकान जिसे बड़े बाबा के निर्देश पर उनके भक्तों ने खोला था ताकि गाँव के बाहर से आने वाले लोगों को सुविधा हो।

जब अम्मा कैलास-निवास पहुँच रही थीं और उन्हें उसकी छत, महराब आदि की झलक मिलने लगी थी, तब उन्होंने देखा कि द्वार तो अभी खुले नहीं हैं। इसलिए वे बाहर बैठ गईं और वहीं प्रतीक्षा करने लगीं। कुछ अन्य लोग भी यहाँ से वहाँ घूम रहे थे, जिनमें से कई दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

दस मिनट बीते। बीस मिनट। एक घण्टा, दो घण्टे और अचानक देखा कि दोपहर होने वाली है। गर्मियों के मौसम में, नीले आकाश में तपता सूरज ऊपर चढ़ चुका था। अम्मा को अब चिन्ता होने लगी थी। एक ओर, अगर वे जल्दी घर नहीं पहुँची तो सप्तर्षि-पूजा का मुहूर्त निकल जाएगा। और उन्हें यह पूजा करनी ही थी। यह तो वह नियमित पूजा थी जिसका उन्होंने व्रत लिया था; यह उनका तरीक़ा था सप्तर्षियों को प्रसन्न कर उनके आशीर्वाद पाने का।

फिर भी — अब तक वे यहीं गणेशपुरी में थीं, अपने श्रीगुरु, बड़े बाबा के दर्शन पाने के लिए। बड़े बाबा के दर्शन किए बिना, उन्हें अपनी वापसी के विषय में बताए बिना और उनकी अनुमति लिए बिना अम्मा वहाँ से नहीं जा सकती थीं।

वे इसी उधेड़बुन में लगी थीं कि तभी उनकी नज़र कुछ ही दूरी पर स्थित गर्म पानी के कुण्ड पर पड़ी। गर्म पानी सोते में से बहकर चौकोर कुण्डों में जा रहा था जिनमें से भाप ऊपर उठ रही थी। रोज़ सुबह लगभग तीन बजे बड़े बाबा इन कुण्डों में स्नान किया करते थे। और फिर पूरे दिन, बड़े बाबा के दर्शन करने आए लोग भी प्रायः इनमें स्नान करते और अपने श्रीगुरु के समक्ष जाने से पहले स्वयं को स्वच्छ-पवित्र करते।

अम्मा जहाँ बैठी थीं, वहाँ से उठीं और कुण्ड के पास गईं, उन्होंने सोचा कि जब तक वे प्रतीक्षा कर रही हैं उतनी देर में वे जल्दी-से स्नान कर लेंगी। उस दिन बहुत गर्मी थी इसलिए आस-पास और कोई नहीं था; पूरे कुण्ड में वे अकेली थीं। उन्होंने अपनी साड़ी सँभाली और पानी में उतर गईं।

वे अपने स्नान का आनन्द ले रही थीं — पानी उनकी कमर तक आ रहा था और उनके चारों ओर हल्की-हल्की लहरें बना रहा था — कि तभी उन्हें कहीं आस-पास से एक आवाज़ आती सुनाई दी। बल्कि कई सारी आवाज़ें सुनाई दीं : आह्लाद की, छोटे-छोटे पैरों से तेज़-तेज़ चलने की आवाज़ें। उन्होंने आस-पास देखा तो आश्चर्यचकित रह गईं — कुण्ड के किनारे पर नन्हें बालकों का एक झुण्ड था; एक, दो — कुल मिलाकर *सात* बालक थे और उनकी आयु पाँच या छः वर्ष से अधिक नहीं थी।

इससे पहले कि वे कुछ कह पातीं, वे बालक पानी में कूदकर खेलने लगे। वे एक-दूसरे पर पानी उछाल रहे थे; उन्होंने अम्मा पर भी पानी फेंका; वे पूरे कुण्ड में उछल-कूद कर रहे थे।

“बच्चो,” उन्होंने कहा, उनकी आवाज़ में मधुरता के साथ-साथ दृढ़ता भी थी, “मैं स्नान कर रही हूँ, मुझे परेशान मत करो।”

अम्मा जल्दी-ही कुण्ड से बाहर आ गईं। उन्होंने कपड़े बदलकर सूखे वस्त्र पहने और वापस कैलास-निवास की ओर चल दीं। तब तक धूप और तेज़ हो चुकी थी।

कैलास-निवास के पास पहुँचते हुए उन्हें वातावरण में कुछ महसूस होने लगा, कोई तो बात ज़रूर थी : एक ख़ास सजगता थी, क्या होगा-कैसे होगा इसकी प्रत्याशा थी। लोग पंक्ति में खड़े होने लगे थे, तैयार हो रहे थे।

और फिर — कैलास-निवास के द्वार खुल गए। एक सेवक दर्शन के लिए लोगों को अन्दर भेजने लगा। और वहीं, अन्दर बड़े बाबा विराजमान थे।

अपनी दर्शन करने की बारी आने पर अम्मा बड़े बाबा के समक्ष आईं। कृष्णवर्ण व देदीप्यमान स्वरूप था बड़े बाबा का, ऐसा महसूस होता कि उनकी उपस्थिति से वातावरण के कण-कण में कुछ विलक्षण बात है, जादुई-सा कुछ है जो शायद पहुँच के बाहर लगता था; लेकिन हाँ, बड़े बाबा के सान्निध्य में वह सदैव प्रबलता से मौजूद होता – और वह जादुई एहसास था, प्रशान्ति का। अम्मा ने झुककर बड़े बाबा को प्रणाम किया।

और फिर बड़े बाबा ने उनसे कहा :

“तो, तुम्हें सप्तर्षियों के दर्शन हुए?”

अम्मा ने ऊपर देखा, उनके चेहरे पर आश्चर्य का भाव था। भारत में, लोग कहते हैं कि व्यक्ति का व्रत, उसका अनुष्ठान तब फलित होता है जब उसे अपने इष्ट-देवता के दर्शन होते हैं। अम्मा को वे सात छोटे बालक याद आए। वे बड़े बाबा की ओर एकटक देखती रह गईं।

उनके हृदय में, उनके मन में या शायद अन्तर के किसी असीम व देदीप्यमान स्थान में, बड़े बाबा जी के शब्द गूँज रहे थे।

“तो, तुम्हें सप्तर्षियों के दर्शन हुए?”

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।